नुज़ूले ईसा अलैहिस्सलाम 800

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहमवाला है।

सब तारीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सारे जहान का पालनहार है। हम उसी से मदद व माफी चाहते हैं। अल्लाह की ला तादाद सलामती, रहमते व बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रजि. पर। व बअद –

ईसा अलैहि. अल्लाह के मुक़र्रब अम्बिया में से एक हैं। आप नबी भी हैं और रसूल भी। "बेशक! अल्लाह के नज़दीक ईसा (अलैहि.) की मिसाल आदम (अलैहि.) की सी है। अल्लाह ने उसे मिट्टी से पैदा किया। उससे कहा कि हो जा तो वह हो गया।" (आले इमरान आयत – 59)

ईसा अलैहि. बग़ैर बाप के पैदा किये गए। उनकी मां मरयम अलैहि. अपनी नेकी व कसरते इबादत की वजह से एक मुम्ताज़ हैंसियत रखती थीं। "अल्लाह उन्हें अपने पास से रिज़्क़ अता करता था।" (आले इमरान आयत 37)

फ़रमाने रसूल सल्ल. है "दुनिया भर की औरतों में 4 औरतें अफ़ज़ल तरीन हैं।

1. मरयम बिन्ते इमरान 2. फ़िरऔन की बीवी आसिया 3. ख़दीजा (रज़ि.) 4. फ़ातिमा (रजि.) (सिलसिला अहादीस अल सहीहा 1508 तिर्मिजी 3878)

मरयम अलैहि. का अल्लाह के हुक्म से हामिला होना –

एक रोज़ मरयम जब किसी ज़रुरत से मस्जिद से निकल कर उसकी मशरिक़ी जानिब पहुंची तो अल्लाह के हुक्म से जिब्रील अलैहि. उनके पास मर्द की शक्ल में आए। जैसे ही मरयम की निगाह उन पर पड़ी तो बेइख्तियार बोल उठी। "मैं तेरे शर से रहमान की पनाह चाहती हूं, अगर तू थोड़ा भी अल्लाह से डरने वाला है। (इस पर) जिब्रील (अलैहि.) ने कहा "मैं तो अल्लाह का भेजा हुआ क़ासिद हूं। तुम्हें एक पाकबाज़ लड़का अता करने आया हूं। "वह बोलीं भला मेरे हां लड़का कैसे हो सकता है? मुझे तो किसी इन्सान ने हाथ तक नहीं लगाया और न ही मैं बदकार हूं। जिब्रील ने कहा " बात तो यही है (मगर) तेरा रब फ़रमाता है कि यह काम मेरे लिए बहुत आसान है। ताकि "हम उसे (ईसा को) लोगों के लिए एक निशानी बना दें। फिर हम (अल्लाह) ने अपनी तरफ़ से उसमें जान फूंक दी। (यानि जिब्रील अलैहि. ने अल्लाह के हुक्म से मरयम के गिरेबान में फूंक

मारी) तो वह उस बच्चे के साथ हामिला हो गई और उस हमल को लेकर एक दूर जगह चली गई।'' इस डर से कि जब हमल ज़ाहिर होगा तो लोग उनके बारे में क्या–क्या बातें कहेंगें ? ''फिर दर्देज़ाह उसे एक खजूर के तने के पास ले आया। वह कहने लगी कि काश मैं इससे पहले ही मर गई होती और भूली–बिसरी हो जाती। यह बात मरयम (अलैहि.) ने इसलिए कही कि लोग उनकी बात का यक़ीन नहीं करेगें। तरह–तरह की बातें बनाएगें और बदकारी का इल्ज़ाम लगाएगें। हालांकि लोगों के नजदीक वह मस्जिद में रहने वाली एक इबादत गुज़ार औरत थी जिसका तअल्लुक नबुवत व दयानत वाले ख़ानदान से था।

''फिर उसे नीचे से ही फ़रिश्ते ने कहा ग़म न कर, परेशान न हो। तेरे रब ने तेरे नीचे से चश्मा जारी कर तुम्हारे लिए नहर जारी कर दी है। तू खजूर का तना अपनी तरफ हिला। वह तुझ पर ताज़ा पकी हुई खजूरें गिराएगा। उन्हें तू खा–पी और अपनी आंखे ठंडी कर। अगर तू इन्सानों में से किसी को देखे तो उसे बता देना कि मैने रहमान के लिए (चुप के) रोज़े की नज़र मानी है।

फिर वह उसे (ईसा को) लिये हुए अपनी क़ौम के पास आई। सब कहने लगे मरयम तू ने बड़ी बुरी हरकत की। ऐ हारुन की बहन। न तो तेरा बाप बुरा आदमी था और न ही तेरी मां बदकार थी।'' जब लोग इस तरह की बाते करने लगे तो ''मरयम ने उसे बच्चे की तरफ़ इशारा किया तो लोगों ने कहा हम गोद के बच्चे से भला क्या बात करें ?'' (इस पर) वह (बच्चा) बोल पड़ा ''बेशक! मैं अल्लाह का बन्दा हूं। उसने मुझे किताब दी है और नबी बनाया है। बाबरकत भी, जहां भी मैं हूं और जब तक मैं ज़िन्दा हूं मुझे नमाज व ज़कात की अदायगी का हुक्म दिया है और अपनी मां से नेक सुलूक करने वाला बनाया है। उसने मुझे बदबख्त नहीं बनाया और सलाम है मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुआ, व जिस दिन मेरी वफ़ात होगी और जिस दिन मैं ज़िन्दा करके उठाया जाऊंगा।'' यह है ईसा बिन मरयम। (यही) वह हक़ बात है जिसमें लोग शक करते हैं। अल्लाह के लायक़ ही नहीं कि वह (अपनी) कोई औलाद बनाए। वह जब किसी काम का फ़ेसला कर लेता है तो उसके लिए बस यही कहता है कि जो जा तो वह हो जाता है। (मरयम, आयत 16 से 35)

ईसा आलैहि. का आसमान की तरफ उठाया जाना।

इर्शादे बारी तआला है ''जब अल्लाह ने कहा – ऐ ईसा! बेशक! मैं तुझे पूरा ले लूंगा व अपनी तरफ उठा लूंगा और इन काफ़िरों से तुझे पाक कर दूंगा।'' (आले इमरान 55) ''उनके यह कहने की वजह से कि हमने अल्लाह के रसूल ईसा बिन मरयम को कत्ल किया। हालांकि उन्होंने न ईसा को क़त्ल किया और न सूली पर

चढ़ाया बल्कि उन लोगों को शक में डाल दिया गया और बेशक जिन्होंने ईसा के बारे में इख़्तिलाफ किया उन्हें ज़रुर शक हुआ है। उन लोगों के पास इस बारे में कोई दलील नहीं। यक़ीनन उन्होंने ईसा को क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने उन्हें अपनी तरफ उठा लिया। (निसा, आयत 157–158)

इन आयात में इस बात की ख़बर है कि जब यहूदियों ने काफ़िर बादशाह से ईसा अलैहि. की चुग़ली की तो बादशाह ने ईसा को क़त्ल करने और उन्हें सूली पर लटकाने का हुक्म जारी कर दिया। ईसा को एक घर में क़ैद कर दिया गया। जब वोह लोग बुरे इरादे से ईसा के पास पहुंचे तो अल्लाह ने वहां मौजूद लोगों में से एक की शक्ल ईसा (अलैहि.) जैसी कर दी और ईसा को एक रोशनदान की राह से आसमान की तरफ उठा लिया। लोगों ने उस दूसरे शख़्स को ईसा समझ कर सूली पर लटका दिया। यहूदियों के इस दावे को ईसाईयों ने भी मान लिया और गुमराही में पड़ गए। इसीलिए इर्शादें बारी हुआ "कोई अहले किताब ऐसा न होगा जो अपनी मौत से पहले ईसा (अलैहि.) पर ईमान न लाए। (निसा आयत 159) मतलब यह कि आख़िरी ज़माने में क़यामे क़यामत से पहले जब ईसा अलैहि. ज़मीन पर उतरेगें तो वह ख़िन्जीर को क़त्ल करेगें। सलीब को तोड़ देगें और जज़या खत्म कर देगें और किसी से भी इस्लाम के सिवा कोई दूसरा दीन क़बूल नहीं करेगें।

एक सवाल – जब ईसा अलैहि. की वफ़ात नहीं हुई और वह ज़िन्दा है तो ईसा अलैहि. की ज़िन्दगी और दूसरे अम्बिया की ज़िन्दगी में क्या फ़र्क है ? क्या सारे अम्बिया (अपनी क़ब्रों में) ज़िन्दा नहीं है ? जैसा कि रसूल सल्ल का इर्शाद है "अम्बिया अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा होते हैं।" (बैहकी फ़त्हुल बारी शरह बुखारी–3447)

जवाब – ईसा अलैहि. इस वक्त आसमानों में ज़िन्दा हैं। उनकी ज़िन्दगी जिस्म व रुह के साथ हक़ीक़ी ज़िन्दगी है जबकि दूसरे अम्बिया की ज़िन्दगी एक ख़ास क़िस्म की बरज़ख़ी ज़िन्दगी है। उनकी रुहें जिस्मों से अलग हो चुकी हैं। उन्हें क़ब्रों में जो ज़िन्दगी हासिल है वह कैसी है ? इसका हमें इल्म व शऊर नहीं।

नुजूले ईसा अलैहि. के दलाइल

1. अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया "बेशक! क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी जब तक कि तुम उससे पहले दस निशानियां न देख लो। उनमें से एक निशानी ईसा अलैहि. का नुज़ूल है।" (मुस्लिम 7285)

2. "उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, क़रीब है कि तुम्हारे बीच ईसा अलैहि. इन्साफ पसंद हाकिम बन कर नाज़िल होगें। ख़िन्जीर (सूअर) को क़त्ल करेगें सलीब को तोड़ देगें और

जज़्या साक़ित कर देगें। उस वक्त माल इतना ज्यादा होगा कि कोई शख़्स लेना न चाहेगा। उस ज़माने में एक सज्दा दुनिया और उसके सारे ख़ज़ानों से ज़्यादा कीमती होगा।'' (बुखारी 3448, मुस्लिम 391)

3. इर्शादेबारी है ''वह (ईसा) कुर्बे क़यामत की अलामत है, तुम उसमें शक न करो।'' (ज़ुखरुफ, आयत–61) इमाम तबरी रह. इस आयत की तफ़्सीर में कहते हैं, ''ईसा अलैहि. का ज़ाहिर होना क़यामत की एक निशानी है। इससे लोग यह जान लेगें कि क़यामत बहुत जल्द आने वाली है।''

4. अहले किताब में से एक भी ऐसा न होगा जो ईसा अलैहि. की मौत से पहले उन पर ईमान न लाए। (निसा,आयत–159) ''यह उसवक़्त होगा जब ईसा अलैहि. नाज़िल होगें उस वक़्त सभी अहले किताब उन पर ईमान ले आएगें। (तफ़सीर तबरी)

एक सवाल – ईसा अलैहि. जब नाज़िल होगें तो क्या वह शरीअते मुहम्मदी के मुताबिक फैसले करेगे ?

जवाब – 1. इमाम सफारीनी कहते हैं, ''उम्मत का इस बात पर इजमाअ है कि ईसा अलैहि. ज़रुर आऐगें और शरीअते मुहम्मदी ही के मुताबिक़ फैसले करेगें। आसमान से नाज़िल होते वक्त कोई नई शरीअत अपने साथ नहीं लाएगें। (लवामेअ अल अनवार अल बहीया जिल्द 1 सफा 94–95)

2. शैख अहमद शाकिर कहते हैं, '' नुजूले ईसा अलैहि. के बारे में मुसलमानों में कोई इख़्तेलाफ नहीं है क्योंकि इस बारे में बहुत सी सही अहादीस वारिद हैं। यह मसअला दीन के बुनियादी अक़ाइद में से है और जो शख्स इसका इन्कार करे वह मोमिन नहीं है। (तअलीक़ तफ़सीर– तबरी)

3. शैख़ अलबानी फ़रमाते हैं, ''अच्छी तरह जान लीजिए खुरुजे दज्जाल और नुज़ूले ईसा अलैहि. के बारे में आई अहादीस मुतवातर है। उन पर ईमान लाना ज़रुरी है।'' (शरह अक़ीदा अल तहावीया – सफ़ा 565)

सवाल – क्या ईसा अलैहि. उम्मते मुहम्मदिया में से हैं ?

जवाब – ईसा अलैहि. अल्लाह के नबी व रसूल हैं। अल्लाह के यहां उन्हें ऊंचा मुकाम हासिल है। सहाबी ए रसूल सल्ल. होने का शर्फ इस मआनी में हासिल है कि मेअराज की रात में आपने मुहम्मद सल्ल. से ईमान की हालत में मुलाक़ात की और इस उम्मत के फ़र्द की हैसियत से उनकी वफ़ात होगी। मुसलमान उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ेगें।

ईसा अलैहि. किन हालात में नाज़िल होगें ?

''मुसलमान एक बड़ी जंग के बाद लौट रहे होगें। कुस्तुनतुनया

मुसलमानों ने फ़तह कर लिया होगा कि अचानक शैतान उनके बीच आकर ऐलान करेगा कि दज्जाल निकल आया है। यह सुनते ही मोमिन दमिश्क की तरफ वापिस लौटेगें। इसके बाद वाक़ई दज्जाल निकल आएगा। वह पूरी ज़मीन में घूमेगा और बड़ा फ़ित्ना बरपा करेगा। (मुस्लिम 7278) एक दूसरी रिवायत है कि,''मुसलमान दज्जाल से जंग के लिए मौत पर बैअत करेगें।'' (नमाज़े फ़ज्र के लिए अक़ामत कही जाएगी। इमाम के तकबीरे तहरीमा कहने से पहले उन पर अन्धेरा छा जाएगा। जब अन्धेरा छंटेगा) तो अचानक ईसा अलैहि. आ जाएगें। उन्होंने जिरह पहन रखी होगी। लोग पूछेगें कि आप कौन हैं ? तो वह फ़रमाएंगें मैं अल्लाह का नबी व रसूल उसकी तरफ से रुह और उसका कलमा ईसा इब्ने मरयम हूं। फिर मुसलमान उनकी क़यादत में दज्जाल से जंग करेगें और फ़तह पायेगें। दज्जाल ईसा अलैहि. को देखकर सीसे की तरह पिघलने लगेगा। यहां तक कि ईसा अलैहि. उसे क़त्ल कर दगें। (मुसनफ अ. रज़्ज़ाक)

ईसा अलैहि. कैसे व कहां से नाज़िल होगें ?

''दमिश्क के मशरिक़ में एक सफ़ेद मीनारे के क़रीब वह उतरेगें उनके जिस्म पर ज़ाफरान से रंगे हुए दो पकड़े होगें और दो फरिश्तों के परो पर अपनी हथैलियां रखे हुए तशरीफ़ लाएगें। यह मीनार मस्जिद में नहीं बलिक एक बाज़ार में है।'' (मुस्लिम 7373)

ईसा अलैहि. की जिस्मानी सिफ़ात

''ईसा अलैहि. दर्मियाने कद के सुर्ख व सफेद रंगत व लम्बे घुंघराले बाल और चौड़े सीने वाले है। (बुखारी 3437 मुस्लिम 424)

ईसा अलैहि. के काम और उनके दौर के वाक़िआत

1. दज्जाल को क़त्ल करने के बाद इस्लामी हुकुमत क़ायम करेगें। लोगों को शरीअत का ताबेदार बनाएगें। सलीब को तोड़ देगें। खिन्जीर (सुअर) को क़त्ल करेगें और जज़या खत्म कर देगें। (बुखारी 3448, अहमद 7665, मुस्लिम 389)

2. लोगों को इस्लाम की दावत देगें। ज़मीन पर अमन व अमान का दौर होगा। हत्ता कि सांप ऊंटों के साथ, चीते गायों के साथ और भेड़िये बकरियों के साथ एक घाट से पानी पियेगें। बच्चे सांपों के साथ खेलेगें मगर सांप उन्हें कोई नुक़सान नहीं पहुंचाएगे। वह 40 साल ज़मीन पर रहकर वफ़ात पाएगें। और मुसलमान उनकी नमाज़े जनाज़ा अदा करेगें। (अहमद 9630)

3. ''बकरियों व ऊंटों की ज़कात नहीं ली जाएगी। आपस की दुश्मनी मिटा दी जाएगी। डंक वाले जानवर का डंक निकाल दिया जाएगा। बच्चा सांप के मुंह में हाथ डाल देगा और उसे कोई नुकसान नहीं पहुचेगा। भेड़िया व बकरी साथ रहेगें। ज़मीन अम्न व सलामती

से भर जाएगी। सब लोग तौहीद पर होगें और अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत नहीं की जाएगी। जंग व जदाल ख़त्म हो जाएगा। ज़मीन चांदी के एक बर्तन जैसी होगी और बहुत ज़्यादा पैदावार देगी। अंगूर का एक गुच्छा हो या एक अनार बहुत से लोगों के लिए काफी होगा। बैल व घोड़े बहुत कम क़ीमत पर मिलेगें। (इब्ने माजा–4075)

4. ''तलवारों को दरातियां बना दिया जाएगा। आसमान अपना रिज़्क नाज़िल करेगा। ज़मीन अपनी बरकात निकालेगी, बच्चे सांप के साथ खेलगें, भेडिया बकरियों की हिफाज़त करेगा और शेर गायों की देखभाल करेगा। (अहमद–10266)

5. ईसा अलैहि. हज या उमरा या दोनों अदा करेगें। (अहमद–7667)

सिर्फ ईसा अलैहि. के नाज़िल होने में हिक्मत

इबने हजर रह. के मुताबिक ईसा अलैहि. के नाज़िल होने में हिक्मत यह है कि यहूद का यह दावा रद्द हो जाए कि हमने ईसा अलैहि. को क़त्ल कर दिया है। वह यह जान लें कि वह ईसा अलैहि. को न तो क़त्ल कर पाए और न सूली पर चढ़ा सके। एक हिक्मत ईसा अलैहि. की इस दुआ का कुबूल होना भी है कि ''ऐ अल्लाह! तू मुझे उम्मते मुहम्मद सल्ल. का एक फ़र्द बना दे।''
(फ़त्हुल बारी, शरह बुखारी हदीस 3449)

ईसा अलैहि. का नाज़िल होना न सिर्फ अलामाते क़यामत में से है कि बल्कि उनकी मौत का वक़्त करीब आ जाने की भी निशानी है। ताकि वह ज़मीन में दफ़न किये जा सकें। नसारा के इस दावे को झूठा साबित करने के लिए कि ईसा अलैहि. अल्लाह के बेटे हैं। अल्लाह तआला उनके ज़माने में सिवाए इस्लाम के सारे दीन व मज़ाहिब को खत्म कर देगा। सारी ज़मीन पर सिर्फ इस्लाम होगा। खुद ईसा अलैहि. भी उमरा या हज या दोनों अदा करेगें।

अगले फोल्डर में इन्शाअल्लाह हम ''खुरुजे दज्जाल'' के बारे में जानेगें। अल्लाह से दुआ है वह हमें अपने दीन की सही समझ व इल्म अता करे, अपने दीन की सीधी राह पर चलाए और हमारी ख़ताओं व गुनाहों को माफ़ फरमा दे। आमीन।

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
09214836639
09887239649
दिनांक 06.04.14